

नमाज़

निस्सन्देह नमाज़ बुराई व बेहयाई से बचाती है

नसीम ग़ाज़ी



मधुर सन्देश संगम

नमाज़

नसीम ग़ाज़ी फ़लाही



मधुर सन्देश संगम
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव जामिआनगर, नई दिल्ली-25

मधुर संदेश संगम प्रकाशन नं. 19

नाम किताब : नमाज़
संकलनकर्ता : नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

प्रकाशक : मधुर संदेश संगम
E-20, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव
नई दिल्ली-110025

हिन्दी एडीशन

1984-1993	35,000
1994	4,000

(मधुर संदेश संगम से)

मूल्य : 3-00

मुद्रक : दावत आफसेट प्रेस दिल्ली-6

क्या?	कहां?

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह-रहमान, रहीम के नाम से'

ज़रूरी बात

हमें और पूरी कायनात को अल्लाह ने पैदा किया है। ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए हमें जितनी चीज़ों की ज़रूरत है, वे सब उसी ने प्रदान की हैं। ज़िन्दगी और मौत उसी के हाथ में है। वही पालनहार है। रोज़ी-रोटी उसी के दिए मिलती है। दुआओं को सुनने वाला, मुसीबत में मदद करने वाला वही है। उसके अलावा कोई हमें नफ़ा या नुक़्सान पहुंचाने की ताक़त नहीं रखता। दुनिया में जो कुछ है उसका हक़ीक़ी मालिक अल्लाह ही है। हाकिम भी वही है, दुनिया का यह कारख़ाना उसी के चलाये चल रहा है। उसका कोई शरीक नहीं, न ज़ात में, न सिफ़ात में और न इख़्तियारात में। मरने के बाद हमारी ज़िन्दगी का हिसाब भी वही लेगा और अमल के मुताबिक़ बदला देगा। हम इन्सानों की रहनुमाई और हिदायत के लिए ख़ुदा ने अपने रसूल और पैग़म्बर भेजे। इन पैग़म्बरों ने ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने का ढंग लोगों को बताया सबसे आख़िर में ख़ुदा ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अपना आख़िरी रसूल बनाकर भेजा और उनके ज़रिए हमारी पूरी रहनुमाई और हिदायत का सामान किया। वास्तव में यही हिदायत है जिसे इस्लाम कहते हैं। इस्लाम के मायने ही हैं अपने को ख़ुदा के हवाले करना और उसका कहा मानना। इस्लाम की तालीम है कि बन्दगी सिर्फ़ ख़ुदा की की जाए। ख़ुदा ही को अपना माबूद बनाया जाए, उसी की पूजा और इबादत की जाए, किसी और के आगे अपना सिर न झुकाया जाय और पूरी ज़िन्दगी ख़ुदा की गुलामी और ताबेदारी में गुज़ारी जाय। इन बातों को हमेशा ज़हन

में याद रखने, ख़ुदा की बन्दगी का हक़ अदा करने, उसके एहसानों का शुक्र अदा करने, ख़ुदा के सामने बन्दा और ग़ुलाम होने के इज़हार और ख़ुदा की बड़ाई और हुकमरानी का इक़रार करने के लिए इस्लाम ने जो इबादती निज़ाम पेश किया है उसमें एक अहम इबादत नमाज़ है। नमाज़ की अहमियत और ज़रूरत का ज़िक्र क़ुरआन और हदीस में बेशुमार जगहों पर हुआ है। दिन में पांच बार नमाज़ पढ़नी हर मुसलमान मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है। किसी मुसलमान के लिए नमाज़ का छोड़ना सख़्त गुनाह की बात है, बल्कि नमाज़ के बिना मुसलमान होने की कल्पना और तस्व्वुर तक इस्लाम में नहीं है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का फ़रमान है, "नमाज़ दीन का सुतून है, जिसने उसे क़ायम रखा, उसने दीन को क़ायम रखा और जिसने उसे ढा दिया उसने पूरे दीन को ढा दिया।" आप (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया है कि "बेशक इन्सान के और शिर्क व कुफ़्र के बीच फ़र्क़ करने वाली चीज़ नमाज़ का छोड़ना है।"

नमाज़ अगर सोच-समझकर पढ़ी जाय तो न सिर्फ़ यह कि वह इन्सान की रूहानी ज़िन्दगी को परवान चढ़ाती, उसे ख़ुदा से क़रीब करती और उसका प्यारा बन्दा बनाती है, बल्कि नमाज़ इन्सान की दुनियावी ज़िन्दगी को बुराइयों और ऐबों से दूर करने और उसे एक ज़िम्मेदार और अच्छा इन्सान बनाने का ज़रिया भी है। सच तो यह है कि नमाज़ इन्सान को इस लायक़ बना देती है कि वह अपनी पूरी ज़िन्दगी अल्लाह के हुक्म और आदेशों के मुताबिक़ गुज़ार सके। यह हक़ीक़त नमाज़ के पूरे वुजूद से स्पष्ट है। क़ुरआन में ख़ुदा का फ़रमान है: "बेशक नमाज़ बे-हयाई के कामों और बुरी बातों से रोक देती है।"

अल-अन-कबूत – ४५

जो लोग हैं तो नमाज़ी मगर नमाज़ की हक़ीक़त से बेख़बर हैं उनके बारे में है: "तो हलाकत व तबाही है ऐसे नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ों (के तक़ाज़ों) से ग़ाफ़िल हैं, ये दिखावा करते हैं

और (ज़रूरतमन्दों को) छोटी-छोटी चीज़ें तक देने से इंकार कर देते हैं।" (माऊन- ४-७) अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमायाः "जिसकी नमाज़ ने उसे बेशर्मी और बुरे कामों से न रोका, उसको उसकी नमाज़ ने अल्लाह से और ज़्यादा दूर कर दिया।" (इब्ने अबी हातिम, तिबरानी)

इस्लाम की इन हिदायतों की रोशनी में हमें अपनी नमाज़ों की जांच करते रहना चाहिए। हमारी पूरी अमली ज़िन्दगी हमारी नमाज़ के मुताबिक़ होनी चाहिए। और ऐसा तभी मुम्किन है जब हम नमाज़ को समझ-बूझकर पढ़ें। नमाज़ पढ़ते वक़्त यह ख़्याल अपने ज़हन में रखें कि हम अपने रब के सामने खड़े हैं और उससे बातें कर रहे हैं और यह कि हमारा रब हमें देख रहा है और हमारी बातें सुन रहा है। नमाज़ में अल्लाह से जो वादे और अहद हमने किये हैं उनको सामने रखकर अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा लेते रहें और उन वादों को निभाने की भरपूर कोशिश करें। आपस में टकराने वाली बातें, झूठ और वादा ख़िलाफ़ी जैसी बुराइयों को अपनी ज़िन्दगी से निकाल बाहर करें।

नमाज़ की इस किताब में नमाज़ में पढ़ी जाने वाली आयतों और दुआओं के तर्जुमे भी दे दिए गये हैं ताकि याद करते समय इनका मतलब भी दिमाग़ में बैठ जाय और नमाज़ी यह समझ ले कि वह अपने रब से क्या कह रहा है। नमाज़ में रुकूअ, सज्दे और अन्य बातों के सिलसिले में प्यारे नबी (सल्ल०) से अनेकों दुआएं और तस्बीहें साबित हैं, यहां उनमें से सिर्फ़ एक, एक को बयान किया गया है, ताकि आम लोग आसानी से याद कर सकें। इस किताब को और मुफ़ीद बनाने के सिलसिले में आने वाले सुझावों का स्वागत किया जायगा।

— नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

नमाज़ की शर्तें

नमाज़ पढ़ने से पहले कुछ चीज़ें ज़रूरी हैं, जो ये हैं :

● **वक़्त और समय** : ज़रूरी है कि जो नमाज़ आप पढ़ना चाहते हैं, उसका वक़्त हो चुका हो।

● **बदन, कपड़े और नमाज़ की जगह का पाक होना।**

● **वुज़ू** : वुज़ू का तरीक़ा पृष्ठ ८ पर दर्ज है।

● **सतर पोशी** : नमाज़ में जिस्म के ख़ास हिस्से को ढांपना ज़रूरी है। मर्द को नाफ़ से घुटने तक का हिस्सा और औरत को चेहरा, हथेली और पैर (टख़नों से नीचे) के अलावा पूरा जिस्म ढांपना ज़रूरी है।

● **काबा की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ना।**

● **नीयत** : नमाज़ पढ़ते वक़्त यह नीयत करना ज़रूरी है कि कौन सी, किस वक़्त की और कितनी रकअत नमाज़ पढ़नी है।

नमाज़ में फ़र्ज़ :

कुछ चीज़ें ऐसी हैं, जिनका पूरा करना नमाज़ में ज़रूरी है, अगर उनमें से कोई एक भी छूट गयी तो नमाज़ न होगी, जो ये हैं :

● **तकबीरे तहरीमा**, यानी 'अल्लाहु अक्बर' कहकर नमाज़ शुरू करना। ● **क़ियाम**, यानी फ़र्ज़ नमाज़ खड़े होकर पढ़ना। (नफ़्ल नमाज़ बैठकर पढ़ना जायज़ है) ● **क़िरअत**, यानी क़ुरआन मजीद से कुछ आयतें पढ़ना। ● **रुकू करना** ● **क़ौमा**, यानी रुकू से उठकर सीधे खड़े होना ● हर रकअत में दो सज्दे करना और उनके बीच बैठना ● **क़ादा**, यानी आख़िरी रकअत में इतनी देर बैठना, जितनी देर में 'अत्तहिय्यात' पढ़ी जा सके। ● सलाम फेर कर नमाज़ ख़त्म करना।

नमाज़ के लिए पाकी

ग़ुस्ल : ग़ुस्ल वाजिब हो तो बिस्मिल्लाह पढ़कर पाक होने की नियत करें। फिर पहले दोनों हाथ गट्टों तक धोयें। जिस्म पर कहीं गन्दगी लगी हुई हो तो उसे बायें हाथ से साफ़ करें। फिर वुज़ू करें, फिर पूरे जिस्म पर पानी डाल कर नहायें। ख़्याल रहे कि अगर जिस्म में बाल भर जगह भी सूखी रह गयी तो आदमी नापाक ही रहेगा।

वुज़ू : पाक साफ पानी लें फिर बिस्मिल्लाह पढ़कर वुज़ू की नीयत के साथ तीन बार दोनों हाथ गट्टों तक धोयें और हाथ की उंगलियों में ख़िलाल करें। दातून हो तो दातून से दांत साफ़ करें, वरना शहादत की उंगली (सीधे हाथ के अंगूठे के पास वाली) से दांतों को मल कर साफ़ करें। फिर तीन बार कुल्ली करें। फिर नाक में पानी डाल कर बायें हाथ की उंगली से नाक साफ़ करें। फिर तीन बार चेहरा धोयें। माथे के बालों से लेकर ठोड़ी के नीचे तक और दोनों कानों की लौ तक तीन बार मुंह धोया जाय, अगर दाढ़ी हो तो उसमें उंगलियों से ख़िलाल करें। फिर पहले दांया, फिर बांया हाथ, कोहनियों समेत धोयें। फिर दोनों हाथ भिगो कर सिर गर्दन और कानों का मसह करें, यानी गीला हाथ फेरें, आख़िर में दोनों पांव, पहले दायां फिर बांया, टख़नों समेत धोयें, पैरों की उंगलियों में ख़िलाल भी करें। पैर धोने के लिए बाँया हाथ इस्तेमाल करें।

तयम्मुम : अगर पानी न मिले या आदमी बीमार हो या और कोई शरई मजबूरी हो तो इस सूरत में पाकी तयम्मुम से हासिल की जायेगी। इसका तरीक़ा यह है कि आदमी पहले तयम्मुम की नीयत करे, फिर 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर पाक मिट्टी या किसी ऐसी चीज़ पर जिस पर पाक धूल-मिट्टी जमी हो दोनों हाथ मार कर एक बार अपने चेहरे पर फेरे और दोबारा हाथ मार कर दोनों हाथों पर कोहनियों समेत फेरे। अगर हाथों में धूल या मिट्टी ज़्यादा लग जाए तो उसे झाड़ ले।

अज़ान

नमाज़ का वक़्त हो जाने के बाद नमाज़ पढ़ने से पहले अज़ान[१] दी जाती है। अज़ान देने वाला काबा की तरफ़ मुंह करके खड़ा होगा और अपने दोनों कानों में उंगलियां डाल लेगा, ताकि बुलन्द आवाज़ से लोगों को पुकारा जा सके। अज़ान के बोल ये हैं :-

सब से पहले अज़ान देने वाला चार बार कहे –

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्लाहु अक्बर – अल्लाह सबसे बड़ा है।

इसके बाद दो बार कहे –

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ، اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह – मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह[२] नहीं।

फिर दो बार कहे –

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह – मैं गवाही देता हूं कि (हज़रत) मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

इसके बाद दाहिनी तरफ़ मुंह करके दो बार कहे –

حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ

हय-य अलस्सलाह – आओ नमाज़ की तरफ़।

---

(१) अज़ान एक अरबी शब्द है, जिसके मायने हैं बुलाना, पुकारना, ऐलान करना। इस्लामी परिभाषा में यह शब्द नमाज़ की तरफ बुलाने के लिए प्रयोग होने लगा है। अज़ान देने वाले को मुअज़्ज़िन कहते हैं।

(२) **इलाह** – पुज्य, ईश्वर, ख़ुदा, माबूद जिसकी बन्दगी की जाय।

फिर बाईं तरफ़ मुंह करके दो बार कहे –

حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ

हय-य अलल फ़लाह – आओ कामियाबी की तरफ़।

इस के बाद मुंह काबे की तरफ़ करके दो बार कहे –

اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ

अल्लाहु अक्बर – अल्लाह सब से बड़ा है।

इस के बाद एक बार कहे –

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ ط

ला इला-ह इल्लल्लाह – अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं।

फ़ज्र की अज़ान :

फ़ज्र की अज़ान में 'हय-य अलल फ़लाह' के बाद दो बार यह भी कहे –

اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْمِ ط اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْمِ ط

अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम – नमाज़ नींद से बेहतर है।

इक़ामत :

फ़र्ज़ नमाज़ जमाअत से पढ़नी चाहिए। जब जमाअत से नमाज़ शुरू हो तो पहले इक़ामत कहनी चाहिए। इक़ामत नमाज़ियों में से एक शख़्स कहेगा। इसके बोल वही हैं जो अज़ान के हैं। हां 'हय-य अलल फ़लाह' के बाद दो बार यह भी कहे –

قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃُ قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوۃُ

क़द क़ामतिस्सलाह – नमाज़ खड़ी हो गयी।

नोट – प्यारे नबी सल्ल० की हिदायत यह है कि अज़ान और इक़ामत सुनने वाले भी यही बोल आहिस्ता-आहिस्ता दोहराते रहें। लेकिन जब

अज़ान या इक़ामत कहने वाला "हय-य अलस्सलाह" और "हय-य अलल फ़लाह" कहे तो सुनने वाला कहे –

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि – कोई तदबीर और कोई ताक़त नहीं मगर अल्लाह के ज़रिए।

इक़ामत कहने वाला जब "क़द क़ामतिस्सलाह" कहे तो सुनने वाला कहे –

اَقَامَهَا اللّٰهُ وَاَدَامَهَا

अक़ा-म हल्लाहु व अदामह – अल्लाह इसे क़ायम और दायम रखे।

अज़ान की दुआ :

अज़ान के बाद यह दुआ पढ़नी चाहिए –

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ
الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَ نِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ
مَقَامًا مَّحْمُوْدَا نِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ ———— (بخارى)

अल्ला हुम-म रब-ब हाज़िहिद्दावतित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम-मद-निल वसील-त वल फ़ज़ील-त वब-असहु मक़ामम महमू-दनिल्लज़ी व अत्तहु

"हे अल्लाह! इस पूरी पुकार के और क़ायम होने वाली नमाज़ के रब! हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को (अपना) सामीप्य और बड़ाई प्रदान कर और उनको उस पसन्दीदा मुक़ाम पर पहुंचा, जिसका तूने वायदा किया है।"

नमाज़ का तरीक़ा

नीयत :

नमाज़ शुरू करते वक़्त काबा की तरफ़ मुंह करके खड़े हों और नीयत करें। नीयत दिल के इरादे का नाम है, और यह बिल्कुल काफ़ी है कि आप दिल से नीयत कर लें कि आप किस वक़्त की कितनी रकअत नमाज़ पढ़ रहे हैं।

तरीक़ा :

नीयत करने के बाद 'अल्लाहु अक्बर' कहते हुए दोनों हाथों को कानों की लौ तक उठायें और सीधा हाथ बायें पर रख कर बांध लें। फिर 'सना' पढ़ें –

सना :

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ
وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हा-न कल्ला हुम-म – हे अल्लाह! तू पाक है।
वबि हमदि-क – शुक्र और तारीफ़ तेरे ही लिए है।
व तबा-र कस्मु-क – तेरा नाम बरकत वाला है।
व तआला जददु-क – तेरी शान सब से ऊंची है।
वला इला-ह ग़ैरु-क – तेरे सिवा कोई इलाह नहीं।

'सना' पढ़ने के बाद 'तअव्वुज़' और 'तस्मिया' पढ़ें –

तअव्वुज़ :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम – मै शैतान मरदूद से बचने के लिए अल्लाह की पनाह में आता हूं।

तस्मिया :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम – अल्लाह-रहमान, रहीम के नाम से।

इसके बाद सूरः फ़ातिहा पढ़ें।

सूरः फ़ातिहा :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ مٰلِكِ يَوْمِ
الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۵ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन	शुक्र और तारीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं, जो सारे जहानों का रब (मालिक, पालनहार और हाकिम) है।
अर्रहमानिर्रहीम	बहुत रहमवाला, बड़ा मेहरबान है।
मालिकि यौमिद्दीन	बदले के ि न का मालिक है।
इय्या-क-नअबुदु व इय्या-क-नस्तईन	हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं।
इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम	हमें सीधी राह चला।
सिरातल्लज़ी-न अन अम-त अलैहिम	उन लोगों की राह जिन पर तूने नवाज़िश फ़रमाई।
ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन –	जिन पर तेरा ग़ज़ब नहीं हुआ, और जो भटके हुए नहीं हैं।

इसके बाद कहें –

اٰمِيْن

आमीन – हे अल्लाह ऐसा ही हो, हमारी दुआ क़ुबूल कर।

इसके बाद क़ुरआन मजीद की कुछ आयतें या कोई सूरः पढ़ें। हम कुछ छोटी सूरतें यहां नक़ल कर रहे हैं –

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْعَصْرِ ○ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِىْ خُسْرٍ ○ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۵ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ○

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	अल्लाह रहमान, रहीम के नाम से।
वल अस्र, इन्नल इन्सा-न	ज़माना गवाह है कि इन्सान हक़ीक़त
लफ़ी ख़ुस्र –	में बड़े घाटे में है।
इल्लल लज़ी-न आ-मनू	सिवाय उन **लोगों** के जो ईमान लाये
व अमिलुस्सालिहात –	और जिन्होंने नेक काम किये।
व तवासौ बिलहक़्क़ि	और एक दूसरे को हक़ की नसीहत
व तवासौ बिस्सब्र –	और सब्र की ताकीद की।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ
وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	अल्लाह-रहमान, रहीम के नाम से।
क़ुल हुवल्लाहु अहद	कहो, वह अल्लाह है अकेला। (उस जैसा कोई और नहीं)
अल्लाहुस्समद	अल्लाह किसी का मुहताज नहीं। (और सब उसके मुहताज हैं)
लम यलिद	उस के कोई औलाद नहीं।
व-लम यूलद	न वह किसी की औलाद है।

व-लम यकुल्लहु कुफ़ुवन अहद	और उस जैसा कोई नहीं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ○ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ○ وَمِنْ
شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ○ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى
الْعُقَدِ ○ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ○

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	अल्लाह-रहमान, रहीम के नाम से।
क़ुल अऊज़ु बि रब्बिल फ़लक़	कहो मैं पनाह मांगता हूँ सुबह के रब की,
मिन शर्रि मा ख़लक़	हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की
व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब	और रात के अंधकार की बुराई से, जबकि वह छा जाय,
वमिन शर्रिन्नफ़्फ़ा साति फ़िल उक़द	और गाठों में फूकने वालों (या वालियों) की बुराई से,
वमिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद	और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ○ مَلِكِ النَّاسِ ○ اِلٰهِ النَّاسِ ○
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۵ الْخَنَّاسِ ○ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ
صُدُوْرِ النَّاسِ ○ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ○

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	अल्लाह-रहमान, रहीम के नाम से।
क़ुल अऊज़ु बि रब्बिन्नास	कहो मैं पनाह मांगता हूँ इन्सानों के रब की,
मलिकिन्नास इलाहिन्नास	इन्सानों के बादशाह, इन्सानों के हक़ीक़ी माबूद की,
मिन शर्रिल वस्वासिल ख़न्नास	उस वस्वसे डालने वाले की बुराई से जो बार बार पलट कर आता है।
अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नास	जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालता है
मिनल जिन्नति वन्नास	चाहे वह जिन्न हो या इन्सान।

इसके बाद "अल्लाहु अक्बर" कहते हुए रुकू करें। रुकू में दोनों हथेलियों और उंगलियों को घुटने पर रख कर झुकें और तीन बार कहें –

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम – मेरा रब जो बड़ी शान वाला है, (हर प्रकार की बुराई और शिर्क से) पाक है।

फिर सीधे खड़े होते हुए कहें –

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

समिअल्लाहु लिमन हमिदः – अल्लाह ने उसकी सुन ली, जिस ने उसका शुक्र और तारीफ़ की।

अब खड़े-खड़े कहें –

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

रब्बना लकल हम्द – हे हमारे रब! शुक्र और तारीफ़ तेरे ही लिए है।

अब 'अल्लाहु अक्बर' कहते हुए सज्दे में **जाएं।** नाक, पेशानी,

हथेलियों और घुटनों को आजिज़ी के साथ ज़मीन पर टेककर सज्दा करें और सज्दे की हालत में तीन बार कहें –

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلٰى

सुब्हा-न रब्बियल आला – मेरा रब जो सबसे ऊँचे मरतबे वाला है, (हर प्रकार की बुराई और शिर्क से) पाक है।

अब 'अल्लाहु अक्बर' कहते हुए सज्दे से सिर उठायें और बायें पैर को बिछा कर इस तरह सीधे बैठ जाएं कि हथेलियां रानों पर फैली हों और उंगलियां काबे की तरफ हों, फिर कहें –

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَعَافِنِيْ وَارْزُقْنِيْ

अल्लाहुम्मग़फ़िरली वर हमनी – हे अल्लाह! मुझे माफ़ कर, मुझ पर रहम कर,

वहदिनी व आफ़िनी वरज़ुक़नी – मुझे हिदायत दे, मुझे आफ़ियत बख़्श और मुझे रोज़ी प्रदान कर।

इसके बाद 'अल्लाहु अक्बर' कहते हुए दूसरा सज्दा करें और फिर 'सुब्हा-न रब्बियल आला' पढ़ें।

दूसरा सज्दा करने के बाद 'अल्लाहु अक्बर' कहते हुए सज्दे से सिर उठायें और सीधे खड़े होकर हाथ बाँध लें। दूसरे सज्दे पर आप की एक रकअत पूरी हो गयी।

दूसरी रकअत में पहले की तरह सब चीज़ें पढ़ें, हाँ 'सना' (यानी सुब्हा-न कल्ला हुम-म) और **'अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम' सिर्फ़ पहली रकअत में पढ़ेंगे बाक़ी में नहीं।**

दूसरी रकअत का दूसरा सज्दा करने के बाद पहले की तरह सीधे बैठ जाएं और बैठे-बैठे पढ़ें –

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ
اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَ

عَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ۝ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا
اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्स-ल-वातु – सलामियां, नमाज़ें और **वत्तय्यिबातु** – तमाम पाकीज़ा चीज़ें अल्लाह के लिए हैं।

अस्सलामु अलै-क अय्युहन नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब-रकातुह- हे नबी! आप पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत और बरकतें हों।

अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन – सलामती हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु – मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह **के सिवा** कोई इलाह नहीं।

व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू – और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद (सल्ल०) उसके बन्दे और उसके रसूल हैं।

(**नोट** – 'अश्हदु अल्ला इला-ह' कहते समय शहादत की उंगली उठायें और 'इल्लल्लाह' कहते हुए गिरा लें।)

अगर केवल दो रकअत की नीयत की हो तो 'अत्तहिय्यातु' के बाद दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़ें जो हम आगे दर्ज कर रहे हैं और सलाम फेर दें। लेकिन अगर तीन या चार रकअत पढ़नी हों तो 'अत्तहिय्यातु' पढ़ने के बाद दरूद शरीफ़ और दुआ न पढ़ें बल्कि 'अल्लाहु अक्बर' कहते हुए खड़े हो जायें और दूसरी रकअत की तरह तीसरी और चौथी रकअत पूरी करें।

अगर फ़र्ज़ नमाज़ की तीन या चार रकअत पढ़ रहे हों तो तीसरी और चौथी रकअत में 'सूरः फ़ातिहा' के बाद क़ुरआन की कोई और सूरः या आयतें न पढ़ें बल्कि 'सूरः फ़ातिहा' पढ़ने के बाद रुकू करें।

अगर सुन्नत या नफ़िल की चार रकअत पढ़ रहे हों तो 'सूरः फ़ातिहा' के बाद कोई सूरः भी उसी तरह पढ़ें जैसे कि पहली दोनों रकअत में पढ़ते हैं। आख़िरी रकअत में बैठकर फिर 'अत्तहिय्यातु' पढ़ें और इसके बाद दरूद शरीफ़ और दुआ पढ़कर सलाम फेर दें। दरूद शरीफ़ और दुआ ये हैं :

दरूद शरीफ़ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव – हे अल्लाह! रहमत भेज (हज़रत) मुहम्मद पर।

व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त – और (हज़रत) मुहम्मद की आल[1] पर।

अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म – जिस तरह तूने रहमत भेजी (हज़रत) इब्राहीम पर और (हज़रत) इब्राहीम की आल पर।

इन्न-क हमीदुम्मजीद – बेशक तू शुक्र व तारीफ़ के लायक़ और बुज़ुर्ग है।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिंव- हे अल्लाह! बरकत नाज़िल कर (हज़रत) मुहम्मद पर।

---

(१) आल- वे लोग जो आप सल्ल० के दीन की पैरवी और दावत की सरबुलन्दी की कोशिश करें, चाहे वह आप की औलाद में हों या अन्य लोग।

व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त – और (हज़रत) मुहम्मद की आल पर।

अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म – जिस तरह तूने बरकत नाज़िल की (हज़रत) इब्राहीम पर। और हज़रत इब्राहीम की आल पर।

इन्न-क हमीदुम्मजीद – बेशक तू शुक्र व तारीफ़ के लायक़ और बुज़ुर्ग है।

दरूद शरीफ़ के बाद कोई दुआ जो क़ुरआन व हदीस से साबित हो पढ़ें। ऐसी एक दुआ यह है –

दुआ :

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً
وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या	हे हमारे रब! हमें इस दुनिया में
ह-स-न-तवं व फ़िल	भी भलाई दे और आख़िरत में
आख़िरति ह-स-न-तवं	भी भलाई दे।
व क़िना अज़ाबन्नार	और हमें जहन्नम की आग से बचा।

दुआ के बाद पहले दाहिनी तरफ़ मुंह कर के कहें और फिर बाईं तरफ़ मुंह कर के कहें –

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह – सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत।

सलाम पर नमाज़ पूरी हो गयी।

वित्र की नमाज़

इशा की फ़र्ज़ और सुन्नत नमाज़ के बाद वित्र नमाज़ पढ़नी वाजिब है। वित्र की तीन रकअतों की पहली दो रकअत तो उसी तरह पढ़ें जैसे और नमाज़ें पढ़ते हैं। दूसरी रकअत में 'अत्तहिय्यातु' पढ़ने के बाद खड़े हो जायें और हाथ बांध लें। तीसरी रकअत में 'सूरः फ़ातिहा' के बाद कोई और सूरः पढ़ें और रुकू में जाने से पहले 'अल्लाहु अक्बर' कहते हुए दोनों हाथ कानों तक उठाएं और बांध लें। फिर 'दुआ-ए-क़ुनूत' पढ़ें-

दुआ-ए-क़ुनूत :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ
عَلَيْكَ وَنُثْنِىْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَ
نَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ
نُصَلِّىْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ
وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ

अल्लाहुम-म इन्ना नस्तईनु-क,	हे अल्लाह! हम तुझ से मदद मांगते हैं, और तुझ से माफ़ी
व नस्तग़फ़िरु-क, व नुअ्मिनु बि-क	चाहते हैं, और तुझ पर ईमान रखते हैं, और तुझ पर भरोसा
व न-त-वक्कलु अलै-क, व नुस्नी	करते हैं, और भलाई के साथ तेरा गुणगान करते हैं, और तेरा
अलैकल ख़ैर, व नशकुरु-क, वला	शुक्र अदा करते हैं, और तेरी नाशुक्री नहीं करते, और जो

नक़्फ़ुरु-क, व नख़्लउ न नतरुकु	तेरा कहा नहीं मानता उसे हम छोड़ देते हैं और उससे अलग हो
मैय्यफ़ जुरु-क, अल्लाहुम-म इय्या	जाते हैं, हे अल्लाह! हम तेरी ही बन्दगी करते हैं, और हम
-क नअबुदु, व ल-क-नुसल्ली व	तेरे ही लिए नमाज़ पढ़ते हैं और तुझ ही को सज्दा करते हैं, और
नस्जुदु, व इलै-क नसआ व नह-	हम तेरी ही तरफ़ लपकते और तेरी ही ख़िदमत बजा लाते हैं,
फ़िदु, व नरजू रह-म-त-क, व	और हम तेरी रहमत के उम्मीद-वार हैं, और तेरे अज़ाब से
नख़शा अज़ाब-क, इन-न् अज़ाब-क	डरते हैं, बेशक तेरा अज़ाब कुफ़्र
बिल कुफ़्फ़ारि मुलहिक़	करने वालों को मिल कर रहेगा।

इस दुआ के बाद रुकू और सज्दा करें और 'अत्तहिय्यात', 'दरूद' और 'दुआ' पढ़ें और सलाम फेर दें।

जमाअत से नमाज़ :

मर्दों को फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद में जमाअत ही से पढ़नी चाहिए। अगर दो नमाज़ी भी जमा हो जायें तो अपने में से एक को इमाम बना लें।

'इक़ामत' के बाद इमाम 'अल्लाहु अक्बर' कहते हुए नीयत बांधेगा। मुक़तदी यानी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले भी नीयत बांध लें और आहिस्ता-आहिस्ता 'सना' पढ़ें। जहरी रकअतों में, यानी जिनमें इमाम 'सूरः फ़ातिहा' और क़ुरआन बुलन्द आवाज़ से पढ़े, मुक़तदी ख़ामोश रहें और ध्यान से सुनें। कुछ आलिमों के विचार में सिर्री रकअतों में, यानी जिनमें इमाम 'सूरः फ़ातिहा' और क़ुरआन आहिस्ता-आहिस्ता पढ़े, मुक़तदी भी आहिस्तगी के साथ सूरः फ़ातिहा पढ़ें। नमाज़ की बाक़ी सभी दुआयें और तस्बीहें मुक़्तदी भी पढ़ें, हां रुकू से उठते समय जब इमाम 'समिअल्लाहु लिमन हमिदः' कहे तो

मुक़तदी 'रब्बना लकल हम्द' कहें।

अगर कोई नमाज़ी जमाअत में उस समय आकर मिला जब इमाम ने एक या एक से ज़्यादा रकअतें पढ़ ली हों तो उस नमाज़ी को चाहिये कि इमाम के पीछे उसे जितनी रकअतें मिलें पढ़ ले। लेकिन आख़िरी रकअत में जब बैठे तो 'अत्तहिय्यातु' पढ़कर रुक जाये। जब इमाम सलाम फेरे तो वह सलाम न फेरे बल्कि अब खड़े होकर छूटी हुई रकअतें अकेला पढ़े और उनमें 'सूरः फ़ातिहा' और क़ुरआन की आयतें और जो कुछ पढ़ा जाता है सब पढ़े।

अगर मग़रिब की नमाज़ में दो रकअतें छूटी हैं तो चाहिये कि खड़े होकर छूटी हुई रकअतों में से एक रकअत पढ़े और बैठ जाये फिर 'अत्तहिय्यात' पढ़ कर खड़ा हो और अब दूसरी छूटी हुई रकअत पढ़े।

अगर चार रकअत वाली नमाज़ में तीन रकअत छूटी हों तो खड़े होकर एक छूटी हुई रकअत पढ़े और बैठ जाये और 'अत्तहिय्यात' पढ़कर फिर खड़ा हो और बाक़ी दो रकअतें पढ़े।

किसी नमाज़ी की कोई रकअत छूट गई और उसने भूले से एक तरफ़ या दोनों तरफ़ इमाम के साथ सलाम फेर दिया लेकिन तुरन्त ही याद आ गया या किसी ने याद दिला दिया तो बोले बिना झट खड़ा हो जाये और रकअत पूरी कर ले। अगर देर लग गई लेकिन अभी बोला नहीं तो भी खड़ा हो जाये और छूटी हुई रकअत पढ़े लेकिन अब 'सज्दा सहव' करे और अगर इमाम के साथ सलाम फेरने के बाद बोल दिया तो नमाज़ जाती रही, उसे पूरी नमाज़ फिर से पढ़नी होगी।

इमाम रुकू में है और नमाज़ी जमाअत में शामिल हो गया और रुकू पा गया तो उसकी कोई रकअत नहीं छूटी। लेकिन रुकू पाने के लालच में दौड़ना और जल्दी करना मना है। इत्मीनान से नीयत बांधकर 'अल्लाहु अक्बर' कहे इसके बाद दूसरी बार 'अल्लाहु अक्बर'

कह कर रुकू में जाये, जल्दी में अगर 'तकबीरे तहरीमा' न कह सका तो नमाज़ न होगी।

जुमा की नमाज़ :

जुमा की नमाज़ हर मुस्लिम मर्द पर फ़र्ज़ है। औरत, बीमार और मुसाफ़िर पर फ़र्ज़ नहीं। हां अगर पढ़ लें तो अदा हो जायेगी।

यह नमाज़ जुमा के दिन ज़ुह्र की नमाज़ के समय पढ़ी जाती है। लेकिन इस में चार रकअत फ़र्ज़ के बदले सिर्फ़ दो रकअतें फ़र्ज़ की पढ़ी जाती हैं।

अगर किसी वाक़ई उज़्र की वजह से कोई जुमा की नमाज़ न पढ़ सके तो उसे ज़ुह्र की नमाज़ पढ़नी होगी।

जुमा की नमाज़ जमाअत से मस्जिद ही में पढ़ सकते हैं, अकेले अकेले नहीं।

जुमा की फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ाने से पहले इमाम मिम्बर पर बैठेगा, फिर मुअज़्ज़िन अज़ान देगा। फिर इमाम मिम्बर पर खड़े होकर दो ख़ुत्बे देगा। जब ख़ुत्बा दिया जा रहा हो तो लोगों को सुकून और ख़ामोशी से सुनना चाहिए। यहां तक कि ख़ुत्बा शुरू होने के बाद किसी को किसी ग़लत काम पर टोकना भी मना है।

ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा की नमाज़ :

दोनों ईदों की दो-दो रकअत नमाज़ पढ़नी वाजिब है। ये नमाज़ें आबादी से बाहर जमाअत से पढ़ी जाती हैं। अगर जमाअत छूट जाय तो अकेले नहीं पढ़ सकते। इन नमाज़ों का समय सुबह सूरज ऊंचा हो जाने के बाद से सूरज ढलने से पहले तक है। इन नमाज़ों को अदा करने के लिए जाते वक़्त और वापसी में भी यह तकबीर पढ़ते रहें:

اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

وَاللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ

अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, वलिल्लाहिल हम्द

"अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है। उसके अलावा कोई इलाह नहीं। और अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है। और तारीफ़ और शुक्र अल्लाह ही के लिए है।"

नमाज़ पढ़कर लौटते समय रास्ता बदल देना चाहिए। ईदुल फ़ित्र में यह तकबीर आहिस्ता-आहिस्ता और ईदुल अज़्हा में कुछ आवाज़ से पढ़नी चाहिए।

तरीक़ा : ईद की नमाज़ में दूसरी नमाज़ों के मुक़ाबले छः तकबीरें (अल्लाहु अक्बर) ज़्यादा होती हैं।

ईद की नमाज़ पढ़ते समय सबसे पहले नीयत करनी चाहिए कि आप जमाअत से ईद की दो रकअत वाजिब नमाज़ छः ज़ायद तकबीरों के साथ पढ़ रहे हैं। नीयत के बाद इमाम ज़ोर से 'अल्लाहु अक्बर' कहता हुआ हाथ कानों की लौ तक ले जाय फिर नीयत बांध ले, उसके पीछे मुक़्तदी भी आहिस्ता से 'अल्लाहु अक्बर' कहते हुए नीयत बांध लें। अब इमाम और सब मुक़्तदी 'सना' यानी 'सुब्हा-न कल्ला हुम-म' पढ़ें, जो इस किताब के पेज नं० १२ पर दर्ज है।

इसके बाद इमाम ज़ोर से 'अल्लाहु अक्बर' कहता हुआ हाथ कानों तक ले जायेगा और खुले छोड़ देगा। मुक़्तदी भी ऐसा ही करें। दूसरी बार फिर इमाम हाथ कानों तक ले जाकर 'अल्लाहु अक्बर' कहेगा और हाथ छोड़ देगा। मुक़्तदी भी ऐसा ही करें। तीसरी बार इमाम 'अल्लाहु अक्बर' कहता हुआ हाथ कानों तक ले जायेगा और फिर बांध लेगा, मुक़्तदी भी ऐसा ही करें। मुक़्तदी 'अल्लाहु अक्बर' आहिस्ता से कहेंगे।

अब इमाम 'तअव्वुज़, 'तस्मिया', 'सूरः फ़ातिहा' और क़ुरआन की कोई सूरा पढ़कर, रुकू सज्दा करेगा। मुक़्तदी भी रुकू, सज्दा करें। इस तरह एक रकअत पूरी हो गयी।

दूसरी रकअत में इमाम 'सूरा फ़ातिहा' और कोई सूरा पढ़ेगा। फिर रुकू से पहले ज़ोर से 'अल्लाहु अक्बर' कह कर हाथ कानों तक उठायेगा और छोड़ देगा, मुक़्तदी भी ऐसा ही करें। दूसरी और तीसरी बार भी इमाम 'अल्लाहु अक्बर' कहकर हाथ कानों तक ले जायेगा और छोड़ देगा। मुक़्तदी भी ऐसा हीं करें। चौथी बार इमाम हाथ उठाये बग़ैर 'अल्लाहु अक्बर' कहेगा और रुकू में चला जायेगा, मुक़्तदी भी ऐसा ही करें। फिर नमाज़ पूरी करेंगे।

नमाज़ के बाद इमाम फ़ौरन मिम्बर पर जायेगा और दो ख़ुत्बे देगा। ख़ुत्बे के बाद दुआ होगी।

बीमार की नमाज़ :

अगर आदमी बीमार हो तब भी नमाज़ नहीं छोड़नी चाहिए। हां अगर वह खड़ा होकर नमाज़ न पढ़ सकता हो तो बैठ कर पढ़े और अगर बैठ कर भी न पढ़ सके तो फिर लेट कर नमाज़ पढ़े और रुकू-सज्दे इशारे से करे।

जनाज़े की नमाज़ :

अगर किसी मुसलमान की मौत हो जाय तो उसे दफ़न करने से पहले उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़नी ज़रूरी है, इस नमाज़ में मुर्दे की नजात और अपनी भलाई के लिए दुआ की जाती है। जनाज़े की नमाज़ खड़े-खड़े पढ़ी जाती है। इस में रुकू-सज्दा नहीं होता। इस का तरीक़ा यह है कि मय्यत को शरीअत की हिदायत के मुताबिक़ नहला-धुला कर कफ़न पहना दिया जाय। फिर जनाज़े को सामने रखा जाये। एक शख़्स इमाम हो, बाक़ी लोग उसके पीछे ताक़ तादाद (विषम संख्या) में सफ़ (क़तार) बना कर खड़े हो जायें। फिर इमाम मय्यत के वली से नमाज़ पढ़ाने की इजाज़त लेकर नमाज़ शुरू करे।

पहले इमाम इस नमाज़ की नीयत करे। इसके बाद बुलन्द आवाज़ से 'अल्लाहु अक्बर' कहते हुए हाथ कानों तक उठाये और बांध ले।

इमाम के पीछे जनाज़े की नमाज़ पढ़ने वाले लोग भी ऐसा ही करें, वे 'अल्लाहु अक्बर' आहिस्ता से कहें। अब इमाम और मुक़्तदी 'सना' यानी 'सुब्हा-न कल्ला हुम-म' पढ़ें जो इसी किताब में पेज १२ पर दर्ज है।

'सना' के बाद इमाम हाथ बांधे-बांधे बुलन्द आवाज़ से 'अल्लाहु अक्बर' कहे और मुक़्तदी भी आहिस्ता से 'अल्लाहु अक्बर' कहें। अब इमाम और मुक़्तदी आहिस्ता-आहिस्ता 'दरूद' यानी 'अल्लाहुम-म सल्लि' और 'अल्लाहुम-म बारिक' पढ़ें 'दरूद' नमाज़ की इसी किताब के पेज १९ पर देखें।

इसके बाद इमाम फिर बुलन्द आवाज़ से 'अल्लाहु अक्बर' कहे और मुक़्तदी आहिस्ता से। मय्यत अगर किसी बालिग़ की हो तो आहिस्ता-आहिस्ता इमाम और मुक़्तदी यह दुआ पढ़ें –

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا
وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ
عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ

अल्लाहुम्मग़्फ़िर लिहय्यिना व	हे अल्लाह! बख़्श दे, हमारे ज़िन्दा लोगों को और
मय्यितिना व शाहिदिना व	हमारे मुर्दा लोगों को। हमारे हाज़िर लोगों को और ग़ैर हाज़िर
ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना	लोगों को। हमारे छोटों को और बड़ों को। हमारे मर्दों और
व ज़-क-रिना व उनसाना।	औरतों को।
अल्लाहुम-म मन अह ययतहु मिन्ना	हे अल्लाह! तू हम में से जिसको ज़िन्दा रखे,
फ़ अह इही अलल इस्लाम	उसे इस्लाम पर ज़िन्दा रख।

व मन तवफ़्फ़ै तहु मिन्ना फ़ तवफ़्फ़हु अलल ईमान	और हम में से जिसे उठाये ईमान पर उठा।

अगर जनाज़ा नाबालिग़ लड़के का हो, तो यह दुआ पढ़ें –

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّ اجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّ ذُخْرًا
وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

अल्लाहुम्मज अलहु लना फ़-र	हे अल्लाह! इस (बच्चे) को हमारे लिए आगे पहुंच कर सामान करने
-तौं वज अलहु लना अजरौं व	वाला बना। और इस को हमारे लिए सवाब का कारण और वक़्त पर काम आने वाला बना। और बना इसको
ज़ुख़रौं वज अलहु लना	हमारी सिफारिश करने वाला और
शाफ़िऔं व मुशफ़्फ़आ	जिसकी सिफारिश मंजूर हो जाय।

अगर जनाज़ा नाबालिग़ लड़की का हो तो यह दुआ पढ़ें –

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّ اجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّ ذُخْرًا
وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً

अल्लाहुम्मज अलहा लना फ़-र	हे अल्लाह! इस (बच्ची) को हमारे लिए आगे पहुंच कर सामान करने
-तौं वज अलहा लना अजरौं व	वाली बना दे। और इसको हमारे लिए सवाब का कारण और वक़्त पर काम
ज़ुख़रौं वज अलहा लना	आने वाली बना। और बना इस को हमारे लिए सिफ़ारिश करने
शाफ़िअतौं व मुशफ़्फ़अः	वाली और जिसकी सिफ़ारिश मन्जूर हो जाय।

इस के बाद इमाम हाथ बांधे-बांधे बुलन्द आवाज़ से 'अल्लाहु अक्बर' कहे और फिर पहले दायें फिर बायें 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह' कहे। दूसरे नमाज़ी भी आहिस्ता से 'अल्लाहु अक्बर' कहें और दायें-बायें सलाम फेर दें।

नमाज़े जनाज़ा पूरी हो गयी। इस के बाद मुर्दे को शरीअत की हिदायत के मुताबिक़ दफ़न कर दें।

मुसाफ़िर की नमाज़ :

सफ़र में फ़र्ज़ नमाज़ क़स्र की जाती है। क़स्र का मतलब यह है कि मुसाफ़िर ज़ुह्र, अस्र और इशा में चार रकअत फ़र्ज़ के बजाय सिर्फ़ दो रकअत पढ़ ले। सुन्नत अगर चाहे तो पढ़े। अलबत्ता फ़ज्र की सुन्नत और वित्र नहीं छोड़ना चाहिए।

अगर मुसाफ़िर किसी ऐसे इमाम के पीछे नमाज़ पढ़े जो मुसाफ़िर न हो तो ऐसी हालत में वह इमाम की पैरवी करेगा यानी क़स्र नहीं करेगा।

क़ज़ा नमाज़ :

अगर किसी मजबूरी (जैसे कोई सो गया या भूल गया) की वजह से किसी नमाज़ का वक़्त गुज़र जाय और आदमी नमाज़ न पढ़ सके तो यह छूटी हुई नमाज़ दूसरे वक़्त पढ़नी होगी। इसी को नमाज़ की क़ज़ा कहते हैं। क़ज़ा नमाज़ पढ़ने से पहले ज़रूरी है कि नमाज़ी नीयत करे कि वह किस नमाज़ की क़ज़ा पढ़ रहा है। क़ज़ा सिर्फ़ फ़र्ज़ और वाजिब नमाज़ की पढ़ी जायेगी।

सज्दा सहव (भूल का सज्दा) :

नमाज़ की वाजिब बातों में अगर कुछ भूल-चूक हो जाये तो 'सज्दा सहव' करना ज़रूरी है, वरना नमाज़ न होगी। इस का तरीक़ा यह है कि आख़िर की रकअत में सिर्फ़ 'अत्तहिय्यात' पढ़ कर दाहिनी तरफ़ सलाम फेरें, फ़िर मुंह काबे की तरफ़ कर के दो सज्दे करें, फिर

'अत्तहिय्यात', 'दरूद शरीफ़' और 'दुआ' पढ़ कर दोनों तरफ़ सलाम फेर कर नमाज़ पूरी करें।

वे वक़्त जब नमाज़ पढ़नी मना है :

कुछ वक़्त ऐसे हैं जिनमें नमाज़ पढ़ने से प्यारे नबी (सल्ल०) ने मना फ़रमाया है। इनकी तफ़्सील यह है :

● सूरज निकलते वक़्त नमाज़ पढ़नी मना है। जब वह अच्छी तरह निकल आए और कुछ बुलन्द हो जाए तो नमाज़ पढ़ें।

● ठीक दोपहर के वक़्त, जब सूरज बिल्कुल सिर पर हो।

● सूरज डूबने के वक़्त जब वह पीला पड़ जाए। (अगर उस दिन की अस्र की नमाज़ न पढ़ी हो तो पढ़ लें।)

● फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने के बाद सूरज निकलने तक कोई नफ़्ल नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए। कुछ आलिमों के नज़दीक फ़ज्र की सुन्नत अगर छूट जाय तो फ़ज्र की नमाज़ के बाद उसे पढ़ सकते हैं।

● अस्र की नमाज़ पढ़ने के बाद सूरज डूबने तक कोई नफ़्ल नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए।

मस्जिद में दाख़िल होने के आदाब :

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त पहले दायां-पाँव अन्दर रखें और यह दुआ पढ़ें –

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

अल्लाहुम्मफ़ तह ली अबवा-ब रहमतिक।

"हे अल्लाह! अपनी रहमत के द्वार मुझ पर खोल दे।"

जब मस्ज़िद से बाहर आयें तो पहले बायां पाँव निकालें और पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

अल्लाहुम-म इन्नी अस अलु-क मिन फ़ज़लि-क

"हे अल्लाह! मैं तुझ से तेरा फ़ज़्ल चाहता हूं।"

औरतों की नमाज़

औरतों पर भी नमाज़ पढ़नी फ़र्ज़ है। हां महीने और ज़चगी के ख़ास दिनों में नमाज़ पढ़नी मना है। इन दिनों में जो नमाज़ें छूटेंगी उनकी क़ज़ा भी नहीं पढ़नी होगी। औरतों के नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा वही है जो मर्दों के पढ़ने का है, लेकिन कुछ चीज़ों में फ़र्क़ है। औरतों की नमाज़ के सिलसिले में ख़ास बातें ये हैं जिनका ख़याल औरतों को रखना चाहिए।

१- औरतों को नमाज़ शुरू करने से पहले मुँह, हाथ और पैरों के अलावा सारा जिस्म अच्छी तरह ढांपना चाहिए।

२- औरतें नीयत करके पहली बार अल्लाहु अक्बर कहते वक़्त अपने हाथों को दुपट्टे या चादर से बाहर निकालें बिना सीने तक उठायें और दुपट्टे के अन्दर ही हाथ बाधें।

३- हाथों को सीने पर इस तरह बाधें कि दाहिने हाथ की हथेली बायें की पुश्त पर हो।

४- रुकू में बस इतना ही झुकें कि हाथ घुटनों तक पहुँच जायें। हाथ की उंगलियां मिलाकर घुटनों पर रखें। कोहनियां पहलू से मिली रहें और टखने एक दूसरे से जुड़े हुये हों।

५- सज्दा करने से पहले दोनों पैर दाहिनी तरफ़ निकाल लें। इस तरह कि दाहिनी पिंडली बायीं पिंडली पर आ जाये। रानें मिली रहें। पिछला हिस्सा ज़मीन पर रहे। इसके बाद सज्दा करना चाहिए और सज्दे के बाद इसी तरह बैठना भी चाहिए। सज्दे में पेट, रान से, बाज़ू बग़ल से मिले हों। कोहनियां ज़मीन पर बिछी हों और ख़ूब सिमटकर सज्दा करें।

६- नमाज़ में जो पढ़ना है आहिस्ता-आहिस्ता पढ़ें।

७- औरतें नमाज़ घर ही में बग़ैर जमाअत के पढ़ें उनके लिए यही मुनासिब है। बेहतर यह है कि नमाज़ घर के किसी कोने में अदा करें।

फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त

दिन भर में पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है –

(१) **फ़ज्र** – सवेरे पौ फटने के बाद से सूरज निकलने से पहले तक।

(२) **ज़ुह्र** – दोपहर को सूरज ढलने के बाद।

(३) **अस्र** – ज़ुह्र की नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो जाने के बाद और सूरज डूबने से पहले तक।

(४) **मग़रिब** – सूरज डूबने के बाद से पश्चिम की तरफ आसमान पर लाली रहने तक।

(५) **इशा** – मग़रिब की नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो जाने के बाद सुबह पौ फटने तक।

पाँचों नमाज़ों में रक्अतों की तफ़्सील :

वक़्त	सुन्नत	फ़र्ज़	सुन्नत	नफ़्ल[1]	वाजिब
फ़ज्र	२ रक्अत	२ रक्अत	☆	☆	☆
ज़ुह्र	४ ,,	४ ,,	२ रक्अत	२ रक्अत	☆
अस्र	४ ,,[2]	४ ,,	☆	☆	☆
मग़रिब	☆	३ ,,	२ ,,	२ ,,	☆
इशा	४ ,,[2]	४ ,,	२ ,,	२ ,,	३ (वित्र)

(१) नफ़्ल- ऐसे काम कि अगर आप करें तो सवाब मिलेगा और न करने पर गुनाह न होगा। नफ़्ल नमाज़ आप जितनी चाहें पढ़ सकते हैं।

(२) ग़ैर मुअक्कदा – – – वह सुन्नत नमाज़ जिसे कभी नबी (सल्ल०) ने पढ़ी और कभी नहीं। अतः इसको पढ़ने पर सवाब मिलेगा और न पढ़ने पर कोई गुनाह न होगा।